The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 6 | June 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

पर्यावरण सुरक्षा में पशु-पक्षियों की भूमिका एवं उनका संरक्षण: एक सामाजिक सरोकार

नरेश कुमार लोहार
अध्यापक
राजकीय प्राथमिक विद्यालय, घाटाफला (गोदावाडा)
पीईईओ- दमाणा (मगवास)
जिला उदयपुर, राजस्थान - 313702

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Keywords:
डिजर्टिफिकेशन, पर्यावरण संरक्षण, पारिस्थितिकी तंत्र

ABSTRACT

पृथ्वी पर हमें विभिन्न प्रकार के पशु-पक्षी मिलते हैं, जो हमारे प्राकृतिक वातावरण का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। हालांकि, हमारी प्राकृतिक संपदा के दूसरी ओर, हम दुखी तौर पर जानते हैं कि दुनिया की जानवरों और पक्षियों की संख्या में गिरावट लगातार देखी जा रही है। यह गिरावट न केवल पर्यावरणीय परिवर्तनों के कारण हो रही है, बल्कि मुख्य रूप से मनुष्य की गतिविधियों और उनकी अज्ञानता के कारण भी हो रही है। पक्षी विलुप्ति एक गंभीर समस्या है क्योंकि पक्षियों का महत्वपूर्ण योगदान हमारी प्राकृतिक पेयजल और खाद्य सुरक्षा में होता है। पक्षियों को बीज और फल बोने, उगाने और फैलाने का महत्वपूर्ण कार्य मिलता है जिससे विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों का प्रजनन होता है। इसके अलावा, पक्षी भी कीट-नियंत्रण करने में मदद करते हैं, जो हमारे खेती और फसलों को सुरक्षित रखता है। पक्षियों का एक और महत्वपूर्ण योगदान हमारे बायोडायवर्सिटी को सुव्यवस्थित बनाए रखना है। पक्षियों के संकट ग्रस्त होने से हमारे प्राकृतिक परिदृश्य, बायोलॉजिकल संतुलन और वातावरणीय सेवाओं में कमी आती है। प्रस्तुत लेख के अंतर्गत पर्यावरण संरक्षण में इनके योगदान को रेखांकित करते हुए विलुप्त होते पक्षियों के बारे में चर्चा करने के साथ-

साथ इनके बेहतर संरक्षण एवं बचाव के उपायों पर चर्चा की गई है। यह शोध-पत्र मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है।

परिचय:

पर्यावरण संरक्षण का सामान्य आशय पर्यावरण की गुणवत्ता में सुधार करना, उसकी रक्षा करना और उसे संतुलित बनाए रखना है। पर्यावरण के लिए बढ़ती जनसंख्या, जल साइंटिफिक इश्यूज, ओजोन डिप्लेशन, ग्लोबल वार्मिंग से लेकर वनों की कटाई, डिजर्टिफिकेशन और अनेक प्रकार के प्रदूषण आदि मानव जाति के लिए गंभीर खतरा पैदा कर रहे हैं। पर्यावरण संरक्षण व्यक्तियों, समूहों और सरकारों द्वारा प्राकृतिक पर्यावरण की रक्षा करने की एक प्रथा है। इसका ध्येय प्राकृतिक संसाधनों और मौजूदा प्राकृतिक पर्यावरण का संरक्षण करना है।

पर्यावरण की रक्षा करना आवश्यक है क्योंकि यह मनुष्यों और फसलों के लिए सुरक्षित है और पौधों और जानवरों के लिए सुरक्षित है। कुछ शोधकर्ताओं के अनुसार, पर्यावरण संरक्षण का महत्व उन प्रजातियों की विविधता को संरक्षित करने में मदद करना है जो ग्रह प्रकृति और लोगों के लाभ के लिए साझा करता है। इसलिए, पर्यावरण की रक्षा करना महत्वपूर्ण है क्योंकि पर्यावरणीय गिरावट अपरिवर्तनीय है या सभी जानवरों, मनुष्यों या पौधों के लिए बहुत हानिकारक हो सकती है। सतत जीवन जीवन जीने और पर्यावरण को व्यक्तियों के लिए अधिक सुरक्षित बनाने में मदद करता है।

पर्यावरण संरक्षण का महत्व:

- पर्यावरण संरक्षण से वायु, जल और भूमि प्रदूषण कम होता है।
- जैव विविधता की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरण संरक्षण का बहुत महत्व है।
- सभी के सतत विकास के लिए पर्यावरण संरक्षण महत्वपूर्ण है।
- हमारे ग्रह को ग्लोबल वार्मिंग जैसे हानिकारक प्रभावों से बचाने के लिए पर्यावरण संरक्षण भी महत्वपूर्ण है।

पर्यावरण के विभिन्न घटक

पर्यावरण का संरक्षण करना केवल एक जिम्मेदारी नहीं है, यह एक मौलिक कर्तव्य भी है जो हमें अपने ग्रह, स्वयं और आने वाली पीढ़ियों के प्रति देना है। हम सभी में बदलाव लाने की शक्ति है और सरल कदम उठाकर हम अपने ग्रह की रक्षा कर सकते हैं और अपने बच्चों के लिए एक उज्जवल भविष्य सुनिश्चित कर सकते हैं।

पर्यावरण की दृष्टि से पशु पक्षियों का संरक्षण आवश्यक है। पशु-पक्षी सुरक्षित रहेंगे तो पर्यावरण भी सुरक्षित रहेगा। यह दुनिया, यह सृष्टि, यह प्रकृति केवल मानव के लिए नहीं है बल्कि इसमें सबके लिए बराबर व समान जगह है। इस प्रकृति की अवस्था खुद इस तरह है कि यह एक चक्र का निर्माण करती है जो हर प्राणी एवं इस चक्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। पशु-पक्षी भी इसी चक्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। कोई भी प्राणी इस संसार में व्यर्थ नहीं है, सब प्रकृति के विकास में कोई ना कोई योगदान अवश्य देते हैं। अतः पशु पक्षियों की संख्या से पर्यावरण का प्रभावित होना निश्चित है।

हम एक उदाहरण लें तो जो हिंसक जानवर हैं जो अन्य पशुओं को खाते हैं। शाकाहारी जानवर पेड़-पौधों को खाते हैं। हम मानव भी पेड़ पौधों को खाते हैं। कुछ पक्षी कीट-पतंगों को खाते हैं। इस तरह हर इस प्रकृति में हर जीव के लिए भोजन का कोई ना कोई स्रोत उपलब्ध है। यदि प्रकृति का यह चक्र यू नहीं चलता तो किसी एक प्रजाति के प्राणियों की मात्रा अधिक हो सकती थी। चील-कौवे अनविष्ट, शव आदि को खाकर सफाई का कार्य करते हैं। इस प्रकार कुछ पशु-पक्षी इसी तरह पर्यावरण सफाई संतुलन कायम रखने में मदद करते हैं। यदि ये न रहेंगे तो पर्यावरण का संतुलन बिगड़ सकता है अतः पर्यावरण के संरक्षण के लिये पशु-पक्षियों का संरक्षण अति आवश्यक है।

पक्षी प्रकृति का हिस्सा हैं वे पारिस्थितिकी तंत्र और पर्यावरण में योगदान करते हैं। वे प्रकृति के निम्नलिखित तरीकों में सहायक होते हैं:-

1. खाद्य श्रृंखला: पक्षी खाद्य श्रृंखला का हिस्सा हैं। वे मांसाहारी हैं वे कृन्तकों, कीड़े और यहां तक कि सांपों के अधिक जनसंख्या पर एक जांच करते हैं। छोटे पक्षी, सामान्य रूप से, कीड़े और उनके लार्वा को खाएं। जबकि ईगल्स जैसे बड़े लोग भोजन के लिए कृन्तकों और साँप (सरीसृप) का शिकार और मारते हैं

2. स्वैच्छिक: हम जानवरों की एक लाश पर चक्कर लगा सकते हैं। एक जंगल में भी, एक बार शेरों और बाघों द्वारा एक जानवर छोड़ दिया जाता है, शेष पक्षियों द्वारा खाया जाता है पक्षी प्राकृतिक स्वैच्छिक हैं वे प्रकृति मृत और क्षय बातों के साफ रखने में मदद करते हैं। यहां तक कि वे बिना अनाज या फलों को छोड़ देते हैं जो खुले स्थानों में फेंक दिए जाते हैं।

3. बीज प्रसार: बीज प्रसार में पक्षियां महत्वपूर्ण हैं। इसलिए हम पौधों को जमीन पर विभिन्न स्थानों पर अनायास बढ़ते हुए देखते हैं। पक्षी पौधे के फल या बीज खाते हैं। उनमें से कुछ अधीर होते हैं और इस तरह से उत्सर्जित होते हैं। जब ये बीज जमीन पर पहुंचते हैं, तो वे अनुकूल परिस्थितियों में अंकुरण कर सकते हैं। इस प्रकार पक्षी प्राकृतिक बीज फैलाव और पौधे के प्रचार में मदद करते हैं।

4. प्रकृति के लिए सौंदर्य: पक्षी कुछ जीव हैं जो पर्यावरण के लिए आकर्षण जोड़ते हैं। इसलिए हम सुंदरता को प्रतिबिंबित करने के लिए पक्षियों की तस्वीरों और यहां तक कि पक्षियों की तस्वीरें भी देखते हैं।

इस प्रकार पक्षियों मनुष्य और प्रकृति के लिए बहुत मददगार हैं। प्रदूषण के कारण, कीटनाशकों का अधिक उपयोग, आधुनिकीकरण और व्यापक विकिरण कई पक्षी विलुप्त हो रहे हैं। हमें उन्हें बचाने और उन पर प्रौद्योगिकी के खतरों को कम करने की जरूरत है।

प्रवासी पक्षियों का पर्यावरण संरक्षण में योगदान:

विदेशी या प्रवासी पक्षी कभी पर्यावरण संरक्षण में महत्वपूर्ण योगदान है। यह प्रवासी पक्षी हजारों किलोमीटर की यात्रा तय करके प्रतिवर्ष तय जगहों पर चले आते हैं। ये पक्षी मौसमी मेहमान होते हैं जिनका हमारे पर्यावरण संरक्षण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। 29 देशों के पक्षी प्रतिवर्ष भारत के लिए उड़ान भरते हैं। सितंबर-अक्टूबर माह के दौरान बड़े झुंडों के आने का गवाह है जो प्रवास की शुरुआत का प्रतीक है। भारत सरकार के अनुसार, 2019 तक पक्षियों की 1,349 प्रजातियां दर्ज की गई हैं, जिनमें से 78 देश के लिए नियमित हैं और 212 प्रजातियां विश्व स्तर पर खतरे में हैं।

प्रवासी पक्षियों को घोंसले के स्थानों और बच्चों के लिए पर्याप्त भोजन की आवश्यकता होती है। पिछले दशक के दौरान जल निकायों, आर्द्रभूमि, प्राकृतिक घास के मैदानों और जंगलों के नीचे क्षेत्र में कमी उनके लिए बड़ी बाधा साबित हुई है। प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन, जनसंख्या विस्फोट के साथ-साथ मौसम में बदलाव और जलवायु परिवर्तन के कारण जैव विविधता का नुकसान हुआ है। इन कारकों ने प्रवासी पक्षियों के पूरे जीवन चक्र और अस्तित्व पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाला है। पक्षियों के दुष्परिणामों और परिवर्तित प्रवासन पैटर्न को रोकने के लिए नए दृष्टिकोणों की आवश्यकता है।

प्रवासी पक्षी उस पारिस्थितिक तंत्र में कई आवश्यक और अपरिहार्य भूमिका निभाते हैं जिसमें वे रहते हैं और यात्रा करते हैं। ऐसे पक्षी जो बच्चे पैदा करते हैं, वे कीटों और अन्य जीवों को खाकर कीट नियंत्रण एजेंटों के रूप में काम करते हैं जो पर्यावरण और फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं। टिड्डियों का हमला एक ऐसी आपदा है जो पक्षियों की अनुपस्थिति से उत्पन्न होती है। प्रवासी पक्षी बीजों के फैलाव में मदद करते हैं, जिससे उनके मार्गों पर जैव विविधता का रखरखाव होता है। बत्तखें मछली के अंडों को अपनी हिम्मत में नए जल निकायों में ले जा सकती हैं। पक्षियों के अंडों की बूंदें, जिन्हें गुआनो भी कहा जाता है, नाइट्रोजन से भरपूर होती हैं और जैविक उर्वरकों के रूप में कार्य करती हैं। अंडे के छिलके कैल्शियम और अन्य खनिजों के महत्वपूर्ण स्रोत होते हैं।

हालांकि दुनिया के कई हिस्सों में जहां वे यात्रा करते हैं या निवासी हैं, उनके अंडों का अवैध शिकार किया जाता है और उनका शिकार किया जाता है। प्रवासी पक्षियों द्वारा प्रदान किए जाने वाले लाभों से अनजान स्थानीय लोग अक्सर पक्षियों के अस्तित्व के प्रतिकूल व्यवहार में लिप्त होते हैं। संपन्न लोग पर्यावरणीय परिणामों पर कोई विचार किए बिना अपने तालू को खुश करने के लिए पक्षियों का शिकार करते हैं। एक साथी की मृत्यु के परिणामस्वरूप दूसरे की मृत्यु हो सकती है और भुखमरी के कारण पक्षियों के पूरे परिवार और आने वाली पीढ़ियों को प्रभावित करने वाले बच्चे की हानि हो सकती है। जल निकायों और जंगली आवासों के नुकसान के साथ-साथ, कस्बों और गांवों के आस-पास के छोटे-छोटे आवासों में कमी, जहां छोटे झुंड अक्सर शरण लेते हैं, एक प्रमुख चिंता का विषय है। बढ़ते अतिक्रमण और मानवीय हस्तक्षेप के कारण मछली पकड़ने में वृद्धि भोजन की उपलब्धता एक चुनौती बन जाती है और पक्षी भूख से मर सकते हैं।

प्रवासी पक्षियों का बचाव एवं संरक्षण:

- स्कूली बच्चों, युवाओं और जनता को पक्षी प्रवास के महत्व और उनके प्रभावों के बारे में शिक्षित करना।
- प्रवास के मौसम के दौरान नदियों, नदियों और जल निकायों में मछली पकड़ने की गतिविधि को प्रतिबंधित किया जाना चाहिए।
- रासायनिक मुक्त जल निकायों और कीटनाशक मुक्त शिकार आधार सुनिश्चित करने के लिए किसानों द्वारा स्थायी जैविक कृषि पद्धतियों को अपनाना
- पक्षियों को बसाने और उनके घोंसले बनाने में मदद करने के लिए देशी प्रजातियों के साथ आर्द्रभूमि, घास के मैदानों, प्राकृतिक आवासों और जंगलों का संरक्षण करें।

- सिंगल यूज प्लास्टिक पर प्रतिबंध लगाना और सिंगल यूज प्लास्टिक को जल निकायों में डंप करने से बचना
- ड्रोन जैसी आधुनिक तकनीकों का उपयोग उन क्षेत्रों में शिकारियों को ट्रैक करने के लिए किया जा सकता है जहां पक्षी प्रवास करते हैं।
- प्रवासी पक्षियों और उनके प्राकृतिक आवासों के बारे में जागरूकता, संरक्षण और संरक्षण के लिए इको-क्लबों और नागरिकों की पहल को बढ़ावा देना।

पर्यावरण को संतुलित रखने में पेड़-पौधों के साथ ही पशु-पक्षियों की भूमिका भी अहम है। लेकिन मनुष्य के अत्यधिक हस्तक्षेप के चलते इन सबकी संख्या कम होती जा रही है। यदि हम जल्द नहीं चेते तो स्थिति भयावह हो सकती है। कीटनाशकों के बढ़ते प्रयोग से जहां पक्षियों की संख्या कम होती जा रही हैं, वहीं कुछ प्रजातियां तो विलुप्ति के कगार पर पहुंच चुकी हैं। गर्मियों का मौसम विशेषकर पक्षियों के लिए बहुत कष्टप्रद होता है। उन्हें बचाने के लिए सभी को थोड़ा-थोड़ा प्रयास करना होगा। कम से कम एक सकोरा पानी का भरकर छायादार स्थान में रख दें तो बहुत से पंछियों की जान हम बचा सकते हैं।

मनुष्य अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति के साथ लगातार छेड़छाड़ करता जा रहा है। इसके दुष्परिणाम भी साथ-साथ दिखाई देने लगे हैं, हालांकि पर्यावरणविदों का कहना है कि ये दुष्परिणाम लंबी अवधि के होते हैं और अभी जो नजर आ रहे हैं, वे सौंवे हिस्से के बराबर हैं। पर्यावरणविद डॉ. अजय गुप्ता के अनुसार हम धीरे-धीरे करके ईको सिस्टम को खराब करते जा रहे हैं। ईको सिस्टम में हर जीव जंतु की अहम भूमिका होती है। इसके खराब होने का असर हर क्षेत्र में दिखाई पड़ रहा है।

डॉ. अजय गुप्ता के अनुसार ईको सिस्टम का महत्वपूर्ण घटक पेड़-पौधे हैं। इनकी लगातार कटाई का असर पक्षियों व वन्य प्राणियों पर भी पड़ रहा है। पेड़ों की संख्या कम होने से पक्षियों को न तो घोंसले बनाने के लिए जगह मिल पा रही है और न ही पर्याप्त मात्रा में भोजन-पानी मिल रहा है। पेड़ों की संख्या कम होने से बारिश भी कम होती है। जितनी अधिक हरियाली होती है, पक्षियों को पानी की जरूरत भी उतनी कम होती है। पेड़-पौधे तापमान को भी सामान्य बनाए रखने में अहम भूमिका निभाते हैं।

पर्यावरणविद रघुवर यादव के अनुसार खेती में कीटनाशकयुक्त बीजों का प्रयोग पक्षियों के लिए सर्वाधिक नुकसानदायक है। इन्हें खाने से पक्षियों की संख्या बहुत कम रह गई है। कई पक्षी तो विलुप्त होने की कगार तक पहुंच चुके हैं। दूसरी तरफ, गांवों में जोहड़ व तालाब सूख चुके हैं, जिनके किनारे पेड़ों पर पंछी घोंसले बनाकर रहते थे व चहचहाट करते थे। क्षेत्र में सिंचाई के लिए फव्वारा का प्रयोग

करने से ट्यूबवेल पर भी पंछियों को पानी नहीं मिल पाता। सरकार की ओर से भी जीव-जंतुओं के लिए जंगलों में पानी का कोई प्रबंध नहीं किया जाता। सामाजिक संस्थाओं द्वारा जरूर लोगों को घरों में पक्षियों के लिए पानी के सिकोरे भरकर रखने के लिए प्रेरित किया जाता है।

गर्मियों के दौरान पक्षियों को प्यास अधिक लगती है जबकि पानी की उपलब्धता कम हो जाती है। सरकार की ओर से जंगलों में पानी की व्यवस्था पूरी तरह नहीं की जा सकती। इससे पक्षियों में भी डिहाइड्रेशन की शिकायत होती है। क्षेत्र में 45 डिग्री तक तापमान पहुंच जाता है और यह प्रत्येक प्राणी के लिए कष्टकारी होता है। यदि पंछियों को पानी और पेड़ पर्याप्त मिल जाएं तो उनकी जान बचाई जा सकती है।

किसानों द्वारा खेतों में अपशिष्ट जलाने के लिए लगाई जाने वाली आग न केवल खेत की उर्वरा शक्ति को घटाती है बल्कि रेंगने वाले जीव-जंतुओं के साथ ही पक्षियों के घोंसले भी आग में जलाकर नष्ट कर रही है। बहुत से पक्षी खेतों में झाड़ियों और फसल के बीच घोंसला बनाकर अंडे देते हैं। खेतों में लगाई जाने वाली आग इन अंडों के साथ ही पक्षियों को भी जलाकर नष्ट कर देती है। क्षेत्र में टटीहरी, बटेर, पेडीफील्ड, तीतर, बुलबुल आदि खेतों में नीचे जमीन पर घोंसले बनाकर अंडे देते हैं। आग में ये घोंसले व अंडे जलकर नष्ट हो जाते हैं। इनके अलावा शिकारी भी बटेर, तीतर, खरगोश आदि का शिकार कर इनकी संख्या में और कमी कर रहे हैं।

निष्कर्ष:

पर्यावरण सुरक्षा और पशु-पक्षियों के बीच सीधा संबंध है। स्थान विशेष में पाई जाने वाली विभिन्न पशु-पक्षियों की किस्में व उनकी तादात जितनी अधिक होंती है, वहाँ का पर्यावरण उतना ही स्वस्थ और टिकाऊ माना जाता है। अतः पर्यावरण के उचित संरक्षण और देखभाल के लिए पशु-पक्षियों की अति-महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके संरक्षण लिए सरकार के साथ-साथ सभी समाज के सभी सदस्यों को मिलकर भरकस प्रयास करना चाहिए ताकि इन्हें लुप्त होने से बचाया जा सके।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

- डा. वीरेन्द्र सिंह यादव. (2010). पर्यावरण वर्तमान और भविष्य, राधा पब्लिकेशन्स: दरिया गंज, नई दिल्ली।
- शशि शुक्ला और एन. के. तिवारी. (2012). पर्यावरण एक परिचय, श्री रामप्रसाद एण्ड सन्स: हमीदिया रोड, भोपाल।
- डा. एम. के. गोयल. (1997). पर्यावरण शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर: आगरा।

- जगदीश चन्द्र पाण्डेय. (2008). समाज और पर्यावरण, प्रगति प्रकाशन: जयपुर।
- श्यामसुन्दर पुरोहित. (1993). पर्यावरण शिक्षा, अजन्ता बुक्स: बीकानेर।
- संजय तिवारी. (2015). पर्यावरण और प्राकृतिक संसाधान. साहित्य पब्लिकेशन्स: आगरा।
- प्रो. एच.एस. शर्मा. (2019). सामाजिक पर्यावरण, भौतिक एवं जैविक पर्यावरण, राधा प्रकाशन मन्दिर: आगरा।
- ललित सुरजन. (2020). पर्यावरण संरक्षण: विविध आयाम, विधायन (शोध पत्रिका), अंक-19, जुलाई-सितंबर, पृष्ठ 53-58।
- परिवेश मिश्रा. (2020). प्रकृति की पुस्तक में पर्यावरण का गुरुमंत्र, विधायन (शोध पत्रिका), अंक-19, जुलाई-सितंबर, पृष्ठ 73-76।
- वीरेंद्र सिंह यादव. (2015). भारतीय संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ साइंटिफिक एंड इनोवेटिव स्टडीज, वॉल्यूम-3, इश्यू-9, सितंबर, पृष्ठ 05-10।